# 'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत के अक्तूबर, 2013 अंक में 'कर्मगति के ज्ञान द्वारा व्यर्थ संकल्पों से मुक्ति' लेख पढ़कर मेरे जीवन में कुछ साल पहले घटी घटना के कारण जो व्यर्थ संकल्प और बदले की भावना बार-बार आती थी, उसका समापन हो गया। लेख से व्यर्थ चिंतन से बचने का मार्ग मिल गया। भूतकाल की घटना का दोष मैं रिश्तेदार वा संबंधियों को दे रहा था। लेख में दिये गये तर्क से 'कोई देने, कोई लेने आता है' समझ आई कि जो कुछ हो रहा है यह कर्म की गति है। इसमें किसी का कोई दोष नहीं।

**– ब्र.कु.शिवराम,**
**सिन्धुदुर्ग (महाराष्ट्र)**

---

नवम्बर, 2013 अंक को हाथ में लिया, आवरण पर दृष्टि पड़ी, प्रथम चित्र में महामहिम भ्राता प्रणव मुखर्जी, राष्ट्रपति, भारत विराजमान हैं। द्वितीय चित्र में राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी आदि रोमांचक रूप से दृष्टि में आये। देखकर मन और आत्मा दोनों ही प्रफुल्लित हुए। इस ज्ञानमयी पत्रिका ने ईश्वरीय शक्ति का दर्शन करा दिया। धन्य है यह, जो पावन स्थल से निकलकर सारे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान को बिखेर रही है और पाठकों को ओत-प्रोत कर रही है। प्रथम पृष्ठ पर पढ़ने में आया ''ईर्ष्या को जीवन से निकाल दें''। धन्य हैं संजय जी, आपने अपनी अनूठी सोच एवं तीखी-पैनी कलम से मुझे एवं अन्य पाठकों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने का सफल प्रयास किया है। ईर्ष्या से जीवन के हर पहलू में गिरावट दिखाई देती है, ईर्ष्या डाकू बनकर मानसिक शक्ति को लूट लेती है, मानवीय जीवन पंगु बन जाता है। संजय जी की इन सभी बातों में बल है, प्रेरणा है अत: मैं संजय जी को साधुवाद करता हूँ।

**– अत्तर सिंह, सूरजपुर-अलीगढ़**

---

जनवरी, 2014 अंक में ''नवजीवन दाता मेरा बाबा'' लेख तथा अन्य लेख और कविताओं ने शुरू से अन्त तक ज्ञान प्रदान किया। ''ज्ञानामृत'' को लगातार सजाने, संवारने का आपका प्रयत्न निश्चय ही अत्यंत सराहनीय है। विचारोत्तेजक तथा शोधात्मक सामग्री प्रकाशित कर भारतीय वांग्मय की एक अपूर्णीय क्षति को आप पूरा कर रहे हैं। ''ज्ञानामृत'' रचना-चयन की दृष्टि से काफी समृद्ध लगी। रचनाओं का चयन काफी मनोयोग पूर्ण ढंग से किया गया है।

**– पंडित मेवालाल ''परदेशी'',**
**महतवाना, महोबा (उ.प्र.)**

---

नवम्बर, 2013 अंक में लेख ''कामजीत-जगतजीत'' बहुत अच्छा लगा। वैसे तो बाबा ने समय प्रति समय काम रूपी शत्रु को जीतने की अनेक युक्तियाँ बताई हैं परन्तु अच्छा विचार सागर मन्थन कर लेखक ने सभी युक्तियों को एक साथ लेख के रूप में प्रस्तुत किया है जो कि सराहनीय प्रयास है। सम्पादकीय लेख, रमेश भाई जी का लेख व 'दिल से देते चलो दुआएँ' लेख भी बहुत अच्छे लगे। इन लेखों को जितनी बार हम पढ़ते हैं उन से हर बार ज्ञान के नए हीरे-मोती प्राप्त होते हैं जो कि स्व-उन्नति व ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में बहुत लाभदायक हैं।

**– ब्र.कु.बिशन दास, पठानकोट**

---

जनवरी, 2014 के अंक के सभी लेख रोचक, सत्य, अनुभवपूर्ण, मार्मिक, हृदयस्पर्शी और विशेष तौर पर वरदानी साबित हुये। ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने बताया कि वे 'प्युरिटी' पत्रिका के संपादक कैसे बने और बाबा ने अपने वरदान को कैसे साकार किया। उन्होंने सत्य ही कहा कि 'याद' में ही सच्ची कमाई है। ब्र.कु.चंदूलाल भाई का 'सत्य बाबा के सत्य बोल' बिल्कुल सत्य कथन है। ब्रह्माकुमारी अचल बहन का अनुभव 'ड्रामा बना हुआ है, धैर्य के गुण को धारण करना है,' बहुत अच्छा है। ज्ञानामृत सच्चा मार्ग दिखलाने वाली सुंदर पत्रिका है।

**– ब्र.कु.उमाकांत भाई सांगाणी,**
**अमरावती**